पर निराधार असत्य मनगढ़त आरोप नहीं लगाया है और न भविष्य में लगाना चाहता हूं। मैं चाहता हूं कि आप मुझे सदन में यह स्पष्टीकरण करने का मौका दें कि काबुल में प्रधान मंत्री को गलीचा मिला था और मंत्री महोदय ने जान बूझकर सदन को गुमराह करने के लिए भ्रामक और असत्य ढंग से बात की है। आप का राजनारायण।

RE RECOGNITION TO BANGLA DESH

श्री राजनारायण (उत्तर प्रदेश) श्रीमन मैं चाहता हूं कि आप सदन के कुछ सम्मानित सदस्यों को कुछ कंट्रोल करें। बात साफ हो गयी कि सत्य कहां है। मैं जानना चाहता हूं आप से कि क्या किसी मंत्री का यहां प्राइवेट सदन है। मंत्री अपने भवन में जहां वे रहते है वह सब आफिशियल है। मंत्री आफिशियल भवन में रहते है उनका कोई प्राइवेट भवन यहां नहीं है। तो श्रीमन् मैं ने बात साफ कर दी सदन के सम्मानित सदस्यों को कि सत्य क्या है और असत्य क्या है। वे इसका मूल्यांकन करें और वे गांधी जी का एक वाक्य याद रखें कि सार्वजनिक सेवकों को जो भेंटें होती हैं वे उन की निजी नहीं होती वह सार्वजनिक होती हैं।

श्री उपसभापति आप भाषण मत कीजिए।

श्री शीलभद्र याजी (बिहार): क्या भाषण कर रहे हो। बैठो।

श्री राजनारायण. तो यह मामला तो खत्म हो गया। मैंने आप के सामने इसकी सफाई कर दी। श्री चित्ता बाबु साहब ने भी एक आरोप लगाया है। मैं उनसे कहना चाहता हूं कि मैंने उनको हमेशा कोआपरेट किया है और चित्त बाबु जब तक अकेले हैं तब तक मैं उनको कोआपरेट करता रहूंगा। जब वे सरकारी पक्ष में मिल जायेंगे तो हमारा कोआपरेशन खत्म हो जायगा।

श्री उपसभापति. आपके कहने का मतलब क्या कि वह हमेशा अकेले रहेंगे?

श्री राजनारायण अपनी पार्टी के वह अकेले हैं और इसलिए हमारा कर्तव्य है कि मैं श्री चित्ता बाबु की सहायता करूं। अगर वे सरकारी पक्ष में मिल जायेंगे तो हमारा उन से संबंध विच्छेद हो जायगा।

श्री उपसभापति. मैंने सोचा कि आप ने कहा कि जब तक चित्ता बाबु अकेले हैं तब तक साथ देंगे जब वह दुगने हो जायेंगे तब साथ नहीं देंगे।

श्री राजनारायण. आपको हमारी बात साधु बुद्धि से समझनी चाहिए। मैं केवल इतना ही निवेदन करना चाहता हूं कि कल आप ने श्री ओम मेहता को कहा था कि हम लोगों की भावना वे प्रधान मंत्री तक पहुंचा दें...

(Interruptions.)

श्री उपसभापति मैंने आपको मौका दे दिया...

श्री राजनारायण. उसके लिए तो धन्यवाद है लेकिन मैं जानना चाहता हूं कि बंगला देश के बारे में उन्होंने हमारी बात प्रधान मंत्री जी को बतायी? प्रधान मंत्री जी ने उसपर क्या कहा?

(Interruptions.)

श्री सीताराम केसरी (बिहार): कोई भी सदन का सदस्य इस तरह के आरोप नहीं लगा सकता है।

श्री राजनारायण. यह सरकार जानबूझकर बंगला देश के बारे में देश को गुमराह कर रही है। इस समय केवल एक सवाल है—बंगला देश को मान्यता दो और उसकी हथियारी और सामरिक सहायता करो। केवल यही एक सवाल है।

(Interruptions.)

श्री उपसभापति प्लीज सिट डाउन।

श्री राजनारायण. अगर चेयर अपने वचन का पालन नहीं कर रही है और श्री ओम मेहता को दबा नहीं रही है तो चेयर की इस असमर्थता के विरोध में और सरकार की जिद के विरोध में कि वह बंगला देश को मान्यता देने की बात नहीं कर रही है मुझे इस सदन का त्याग करना पड़ेगा और मैं सदन का त्याग केवल सामान्य ढंग से कर रहा हूं एक चेता

[श्री राजनारायण]

वनीः देने हुए कि प्रधान मंत्री को आप कहें कि प्रधान मंत्री कल जरूर आये और बंगला देश पर कल विवाद जरूर हो ।

(Interruptions.)

श्री उपसभापति : ठीक है ।

श्री शीलभद्र याजी : जाना है तो वे जायं । ऐसे झूठे और मक्कार को आप मौका देते हैं ।

श्री राजनारायण : यह बंगला देश का सवाल है । बंगला देश के सवाल पर ओम मेहता असमर्थ हैं और प्रधान मंत्री नहीं आयी हैं इसलिए मैं बाध्य हूं कि मैं सदन का त्याग करूं और मैं सदन का त्याग करूंगा ।

(Interruptions.)

(At this stage the hon. Member left the House)

SHRI A.G. KULKARNI (Maharashtra): Sir, I want to submit that Rajnarainji took the benefit of saying what he wanted to say, but while going away also, he has abused our party unnecessarily and...

MR. DEPUTY CHAIRMAN : Actually he should not have done that when the House has accomodated him.

SHRI BHUPESH GUPTA (West Bengal) : May I make a suggestion ? Let Mr. Sitaram Kesri follow Mr. Rajnarain and find out ..

MR. DEPUTY CHAIRMAN : All right, please sit down. Mr. Chitta Basu.

CALLING ATTENTION TO A MATTER OF URGENT PUBLIC IMPORTANCE

SITUATION ARISING OUT OF RECENT FLOODS IN BIHAR, UTTAR PRADESH AND WEST BENGAL

SHRI CHITTA BASU : Sir, I have got great regard for the hon. Minister, Dr. K. L. Rao, particularly because he knows the subject. I would request him to kindly take special note of my points and reply to them. Is it not a fact that the total allocation in the different Plan periods has been much short of the requirement, having regard to the immensity of the problem arising out of floods each year? In this connection, may I also know from the hon. Minister if it is not a fact that several States are nursing a grievance against the Centre as regards allocation of funds for floods control ? If it is a fact, may I know whether he would press for a larger allocation for flood control and also re-formulate the principles or criteria for allocation of funds for flood control to different States? It should not be merely on the basis of population which to-day is one of the criteria, but strictly on the basis of the needs. Floods does not visit a particular area because it has got a larger population or because it has smaller population. I find that in the matter of allocation of funds for flood control, population is also taken into consideration. I do not understand what population has got to do with the question of floods. Does it mean that a State with less population will have less amount of flood water and a State having a larger population will have a larger amount of flood water ? So, I would like to know whether the Minister would really press for a larger allocation for flood cotrol all over the country and re-formulate the basis or criteria for allocation of funds for this purpose This is in relation to the all-India position.

Coming to West Bengal the question of devastation caused by floods in West Bengal was raised by some of us last year also. I have got some figures with me. In 1968, the flood have caused a loss of Rs. 86 crores. In 1969, the loss was Rs. 14.99 crores. In 1970, it was Rs.86 crores. So, during only three years, from 1968 to 1970, the total damage